सातवाँ अध्याय

उ प सं हा र

सातवाँ अध्याय

उ प सं हा र

सम्पूर्ण शोध कार्य के दौरान मुझे लगा कि अब्दुल बिस्मिल्लाह की रचना दृष्टि प्रगतिशील विचार धारा की रही है । ये विचार , भाव एवं भाषा की दृष्टि से भी हमें प्रगतिशील दिखाई देते हैं । उपसंहार में मैं ने विशेष रूप से इनके कथा-साहित्य के उन मार्मिक एवं यथार्थ बिन्दुओं को केन्द्र में रखकर बात की है जिनको कि आधार बनाकर विभिन्न अध्यायों का मूल्यांकन किया गया है ।

अब्दुल बिस्मिल्लाह सही माने में प्रगतिशील रचनाकार है क्योंकि ये प्रेमचन्द की उस परम्परा में आते हैं जिनका विश्वास यथार्थ जीवन के परिवर्तन में है और जो इसके लिए सामाजिक संघर्ष को आवश्यक मानते हैं । जिनमें कहीं भी कुंठा और निराशा का भाव नहीं पनपता और जिनका संघर्ष निरन्तर विकसित होता जाता है । प्रेमचन्द ने यही रास्ता सुझाया था । "गोदान" ने जिस सामाजिक यथार्थ की नींव डाली अब्दुल बिस्मिल्लाह के कथा-साहित्य ने उसे विकास प्रदान किया । प्रेमचन्द की अपनी समकालीन सीमाएँ थी लेकिन उनका जोर यथार्थ सामाजिक परिवर्तन पर ही था । अब्दुल बिस्मिल्लाह के कथा-साहित्य में यह यथार्थ स्पष्ट दिखाई पड़ता है । लेकिन प्रेमचन्द के बाद आये औपन्यासिक परिवर्तन के संरचनात्मक रूप पर भी उनकी गहरी दृष्टि रही । नव मार्क्सवादी रूझान ने उन्हें इस बात पर गौर करने की प्रेरणा दी कि रचना दर्शन से अनुप्राणित होकर भी उसका हू-बहू रूपायन नहीं बन सकता । एक यथार्थवादी कथा लेखक का , जो मार्क्सवादी विचारधारा

में गहरी आस्था रखता हो , यह कर्तव्य है कि वह अपने जीवन के प्रामाणिक अनुभवों को अपनी कथा का आधार बनायें , उन्हें ऐसी संरचनात्मक प्रणाली में बाँधे कि वे उस संघर्ष को व्यंजित कर सकें , जो शोषित सर्वहारा को शोषक व्यवस्थाकारों के विरूध्द करना पड़ा है । अपने सीमित दायरे में अब्दुल बिस्मिल्लाह ने इस कार्य को अंजाम देते हुए अपनी प्रगतिशील , राजनीतिक तथा सांस्कृतिक दृष्टि को प्रगट किया है । उनका कथा-साहित्य कहीं भी प्रगतिशील चेतना को फार्म्युलाबध्द नहीं करता । उनके उपन्यास और कहानियों में शोषित एवं पीड़ित बुनकर , मजदूर तथा नारियों को यथार्थवादी संघर्ष से जुझने की प्रेरणा मिलती है ।

अपने प्रथम उपन्यास जहरबाद में अब्दुल बिस्मिल्लाह पारिवारिक ज़हरबाद को सामाजिक ज़हरबाद के रूप में उभारने में पूरी तरह सफल हुए हैं । आत्मकथात्मक शैली मे लिखे गये इस उपन्यास के अनुभव इतने प्रामाणिक और चरित्र इतने यथार्थ है कि उपन्यास का नायक मैं और लेखक एकमेव प्रतीत होते हैं । ज़हरबाद का पारिवारिक संघर्ष सामाजिक अर्थव्यवस्था से जुड़ा हुआ है । चूँकि समाज में ऐसी व्यवस्था है नहीं कि परिवार और उसमें पलनेवाले बच्चों की ओर ध्यान दिया जा सके । इसलिए परिवार अर्थाभाव में कलह का कारण बनता है । परिवार में पति-पत्नी का निरंतर झगड़ा एक तरफ पत्नी को आर्थिक संघर्ष के लिए प्रेरित करता है तो दूसरी ओर संघर्षहीन निष्क्रिय पति पत्नी पर ही शक की नज़र से देखता है । अंतत: यह शक तलाक में बदल जाता है । इससे नायक की जो प्रतिक्रिया होती है उससे उसे संघर्ष की प्रेरणा मिलती है ।

आर्थिक व्यवस्था के साथ लेखक ने धार्मिक तथा सांस्कृतिक परम्पराओं की भी पोल खोली है , जिन्हें बदले बिना सामाजिक प्रगति की कल्पना बेमानी होगी । उपन्यास में संवेदनशीलता और रोमानी भाव के लिए भी अवसर आए हैं लेकिन वे लेखक की प्रगतिशील सांस्कृतिक दिशा को धुँधलाने के बजाय उसमें संघर्ष की उत्तेजना जगाते हैं । संघर्ष चेतना का यह रेखांकन , जिसमें सामने शेखर के रोमांटिक संघर्ष की ओर जाने की पूरी गुंजाइश थी, अपनी परिवेशगत स्थितियों के प्रति जागरूक रहने के कारण सामाजिक संघर्ष की ओर मुड़ता है । इस उपन्यास में पारिवारिक संघर्ष पर ही अधिक बल है , लेकिन व्याज भाव से ही सही सामाजिक परिवेश पर भी गहरी नज़र रखी गयी है क्योंकि प्रगतिशील दृष्टि का अर्थ सामाजिक क्रांति ही होता है ।

"समर शेष है " जैसा उपन्यास एक आदमी के अभावों की दर्दभरी दास्तान है । परन्तु उस दर्द को उत्पन्न करनेवाले तत्वों की सही पहचान के बाद वह उससे मुक्ति के लिए संघर्ष करता है । विषम स्थितियों में संघर्ष की चेतना के संयोजना का प्रयास करना ही इस चरित्र का प्रगतिशील परिदृश्य है जिससे लेखक की प्रगतिशील दृष्टि उद्घाटित होती है ।

निरंतर संघर्ष करते हुए व्यक्ति की कड़वाई को , उसके जुझारू स्वभाव को , लेखक ने आगे चलकर "झीनी-झीनी बीनी चदरिया" में व्यक्तित्व विस्तृति प्रदान की है , जो उपन्यासकार की अपनी उपलब्धि होती है ।

वर्ग-संघर्ष की समस्या को "झीनी-झीनी बीनी चदरिया" में उठाया गया है । बुनकरों की खौफनाक जिन्दगी और उसके शोषण का , लेखक ने अपनी यथार्थवादी और मार्मिक व्यंग्यात्मक शैली द्वारा बड़ी बारीकी से उद्घाटन किया है । हाजी अमीरूल्ला, गजाधर प्रसाद आदि शोषक वर्ग की

चरित्र-योजना इस बात की ओर स्पष्ट संकेत करती है कि परिवेश की मारक स्थितियाँ ही व्यक्ति की उन्नति में बाधक हैं, उनको हटाये बिना कुछ होनेवाला नहीं। इसके लिए नयी पीढी को नयी चेतना के साथ अग्रसर होना होगा। इस तरह अपने कथा-साहित्य में संघर्षशील और शोषकों के गतिशील चरित्रांकन के जरिए यथार्थ को गतिशील बनाये रखने में अब्दुल बिस्मिल्लाह सफल हुए हैं। इसमें उनकी प्रगतिशील दृष्टि दिखाई देती है। इसके अलावा वे स्वयं मुस्लिम समाज के विशेष वर्ग से जुड़े रहने के कारण उन्होंने सारी स्थितियों को अपनी आँखों देखा और गहराई से परखा है। यही कारण है कि वे क्षेपक देने में भी घबराते नहीं। अनुभव वृत्त से स्वयं रूपायित होने के कारण इसकी प्रगतिशीलता कृत्रिम न होकर यथार्थवादी बनी है। चलती जिन्दगी के बीच से प्रगतिशील दृश्य अपना साकार लेता गया है।

"दंतकथा" एक मुर्गे के जीवनानुभव की कथा है जो उसी की जबानी कही गई है। उसकी पृष्ठभूमि यद्यपि सीमित है, लेकिन कथा का विस्तार जीवन्त तथा यथार्थपरक है। प्रकृत जीवन की स्वीकृति के कथा-साहित्य का वैशिष्ट्य है जो दंतकथा में स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है।

नवीनतम उपन्यास "मुखड़ा क्या देखें" में एक बहुरंगी सामाजिक सांस्कृतिक वास्तविकता को देखने की चेष्टा की गई है। इसमें पूरे भारत की कथा को बुनने का साहस लेखक ने किया है जिसमें भूरी और में प्यार और शादी दिखाकर अंतरजातीय विवाह को पुष्टि की है और साथ ही परंपरागत मान्यताओं की जड़ता को उखाड़ फेंकने का प्रयास भी किया है। इससे यह साबित होता है कि इनकी प्रगतिशील दृष्टि क्रमशः प्रखर होती गई।

उपर्युक्त उपन्यासों के अलावा उनके कहानियों में भी प्रगतिशील, सांस्कृतिक और राजनीतिक दृष्टि उजागर हुई है। उनकी कहानियों की अन्तर्वस्तु निम्न मध्यवर्गीय जीवन है - वह जीवन जहाँ जड़ता भी है और जागरूकता भी। लेखक अपनी कहानियों में जड़ता को तोड़ता है और जागरूकता को दिशा देता है। " यह कोई अंत नहीं " के मास्टर साहब, "अलिया धोबी और पावभर गोश्त" का अलिया, "भूत" का बदरू, "फौलाद बनता आदमी" का दुलारे, "लफंगा" का मुन्ना लेखक के इसी सोच में ढले हुए संघर्षशील चरित्र हैं।

अब्दुल बिस्मिल्लाह ने कहीं भी यथार्थ की सीमाओं को तोड़ा नहीं है बल्कि उसको उसी रूप में व्यक्त किया है जिस रूप में वे हैं। लेखक स्थिति और पात्र के अनुरूप भाषा प्रयोग में कुशल है और कहीं से भी उनकी विचारधारा पर कोई आघात उससे नहीं हो पाता। उनके सारे पात्र और उनसे जुड़ी स्थितियों के संदर्भ सभी विश्वसनीय लगते हैं क्योंकि उन्होंने उनके भीतर छिपी संघर्ष की चिनगारी को झकझोर कर जागृत करने की कोशिश की है। लेखक ने वर्णन, व्यंग्य, बिम्ब, आत्मकथन, स्वप्न, संबोधन आदि भाषा के विविध प्रयोग रूपों का इस्तेमाल इस तरह किया है कि उससे कथ्य का रूपायन विश्व-सनीय रूप में हो सके। "झीनी-झीनी बीनी चदरिया" का ताना और बाना खण्डों में विभाजन केवल शाब्दिक रूप में ही किया गया नहीं उसकी बुनावट भी उसी अर्थ में की गई है। इस उपन्यास में "द्रोपक" के रूप में "छीर" का पड़ना उसकी सहज बुनावट का परिचायक है। "दंतकथा" में भी शिल्प का अनूठा प्रयोग प्रस्तुत किया है। लेखक ने अभिधेयार्थ में मुर्गा और आदमी के सम्बन्धों का उद्‌घाटन किया है और प्रतीक कथा बुनी है।

इस प्रकार अब्दुल बिस्मिल्लाह ने भावों के अनुरूप ही शब्दों को गढ़ा है और साथ ही उसको उपयुक्त शैली के माध्यम से अभिव्यक्त किया है । इनकी सोच दोनों धरातलों पर प्रगतिशीलता की रही है । प्रारंभिक दौर में कविता लिखने के कारण इनकी मानवीय संवेदना में दयालुता एवं आदर्श के गुण अधिक विद्यमान है जिसका प्रभाव हमें इनके प्रथम दो उपन्यासों में दिखाई देता है ।

समय के साथ-साथ इनकी यथार्थवादी दृष्टि परिपक्व होती गई और इनका बेहतर रचनाकार का रूप हमें "झीनी-झीनी बीनी चदरिया" में दिखाई देता है । "झीनी-झीनी बीनी चदरिया" में अब्दुल बिस्मिल्लाह की प्रगतिशील दृष्टि ने एक अछूते विषय के माध्यम से बुनकर वर्ग की संस्कृति के इतिहास, भूगोल को जिस व्यापक फलक पर प्रस्तुत किया है, वह उस दृष्टि की प्रौढ़ता का प्रमाण है । "मुखड़ा क्या देखें" उसी विकास की अगली कड़ी है । वैसे प्रेम और नारी के प्रति आकर्षण को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि उनकी प्रगतिशील दृष्टि इस रोमानी विषय को गहराई के साथ खोलेगी । "दंतकथा" के जरिये लेखक ने "किस्सागोई" परम्परा को फिर एक बार प्रस्तुत करने का साहस किया है जो सफल बन चुका है । अब्दुल बिस्मिल्लाह कहानियों में भी इसी परम्परा को जोड़ना चाहते हैं ।

इस प्रकार मेरे अनुसंधान की कुछ मुख्य उपलब्धियाँ निम्नलिखित रही हैं :-

§1§ अब्दुल बिस्मिल्लाह का जीवन संघर्षमय रहा । संघर्ष से उभरकर उन्होंने आज की मंजिल तय की है ।

§2§ अब्दुल बिस्मिल्लाह के व्यक्तित्व में सरलता, सादगी, संघर्ष दिखाई देता है । उन्होंने अपने साहित्य में जीवन के यथार्थ चित्रण पर

अधिक बल दिया है । "झीनी झीनी बीनी चदरिया" उपन्यास का "क्षेपक" इसका प्रमाण है ।

§3§ अब्दुल बिस्मिल्लाह की सर्वप्रमुख विशेषता उनका जीवन बोध है ।

§4§ अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यास और कहानियों में शोषित एवं पीड़ित बुनकर, मजदूर तथा नारियों का यथार्थवादी चित्रण हुआ है और जिनमें संघर्ष से जूझने की प्रेरणा मिलती है ।

§5§ कथा-साहित्य में मध्यवर्ग तथा निम्नवर्ग का बेबाक चित्रण है ।

§6§ अब्दुल बिस्मिल्लाह के कथा-साहित्य की मुख्य दृष्टि प्रगतिशील है तथा उसके विभिन्न रूपों और स्तरों पर मनुष्य जी रहा है ।

§7§ अब्दुल बिस्मिल्लाह का उपन्यास "झीनी-झीनी बीनी चदरिया" से हिन्दी उपन्यास साहित्य को नया आयाम मिलता है ।

§8§ अब्दुल बिस्मिल्लाह के कथा-साहित्य में मार्क्सवाद का द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद तो उनकी दृष्टि काआधार है ही, साथ ही वर्ग-संघर्ष प्रमुख है । इसके अलावा उसके आंचलिक रंग, स्थानीय भाषा, किस्सागोईवाला शिल्प, ये भी समान रूप से महत्वपूर्ण हैं ।

§9§ अब्दुल बिस्मिल्लाह के कथा-साहित्य में राजनीति के दाँवपेच, पैंतरबाजी, अवसरवादिता का यथार्थ चित्रण उनकी रचना का केन्द्रबिन्दु रहा है ।

§10§ कथा-साहित्य में मुस्लिम संस्कृति विशेष रूप से दृष्टिगोचर होती है साथ में भारतीय संस्कृति का भी दर्शन दिखाई देता है ।

अंततः हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि अब्दुल बिस्मिल्लाह सही मायने में प्रगतिशील रचनाकार हैं , जिनकी दृष्टि सामाजिक संघर्ष और बुनियादी परिवर्तन पर उनकी प्रगतिशीलता , उनके अनुभव की प्रामाणिक सच्चाई का एहसास कराता है , न कि सिध्दान्तवादी फार्मुलाबध्दता । दरअसल यथार्थवादी विधा होने के कारण कथा साहित्य के विकास में इस प्रकार की प्रगतिशील दृष्टि काफी सहायक सिध्द हो सकती है जिसकी कि आज के समाज के लिए बहुत आवश्यकता है । क्योंकि अभी भी हमारी परंपरागत मानसिकता में बदलाव नहीं आया है ।

...